THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

# ई–मेल हैक करना – परमेश्वर के नियंत्रण से बाहर नहीं !

# E-mail hacking – not beyond God's control !

Author – Poonam Likhi

Christian Science Sentinel Volume 112, No. 26, June. 28, 2010

मैंने भेजने के बटन को क्लिक किया, इससे पूरी तरह बेखबर कि मैंने अपने आप को एक बड़ी मुसीबत में डाल दिया था।

यह एक व्यस्त रविवार की दोपहर थी, तथा मैं चर्च से वापिस आकर सभी कोनों से माँगों का सामना कर रही थी–अगले दिन किसी दूसरे देश की यात्रा के लिए अपने पति की सामान बाँधने में सहायता कर रही थी, अपनी माँ का ख्याल रख रही थी, खाना बनाने पर ध्यान देने की कोशिश कर रही थी तथा फोन की कॉलों को सुन रही थी। किसी की एक कॉल ने, जिसकी मैं प्रार्थना से सहायता कर रही थी, उसने मुझे मेरी ई–मेल खोलने के लिए जल्दी से कम्प्यूटर तक जाने के लिए कहा। तथा वहाँ मैं फंस गई थी, एक असली प्रतीत होने वाले संदेश में जिसने आगे बढ़ने से पहले मेरा पहचान–शब्द सत्यापित करने के लिए कहा। मैंने उसे मान कर क्लिक कर दिया। फिर मेरी ई–मेल ने खुलने से इन्कार कर दिया और मेरे पास इतना भी समय नहीं था कि मैं इस बारे में कुछ सोच सकूँ।

अगले दिन, मेरे पति के जाने के बाद, मैंने अपनी ई–मेल को दोबारा खोलने की कोशिश की, परन्तु कोशिश नाकाम रही। मैं चिन्तित हो गई, क्योंकि मेरा ऑफिस का तथा चर्च का अधिकतर कार्य मेरे ई–मेल को खोल सकने पर निर्भर करता था। क्रिश्चियन साँयस की एक शिष्या होने के नाते, मैं लोगों की प्रार्थना के द्वारा सहायता करती हूँ, तथा ऐसा करने के लिए ई–मेल एक तेज़ तथा प्रभावशाली साधन है।

मैंने यह जानने के लिए प्रार्थना की, कि मेरा दूसरों के साथ वार्तालाप एकदम सही है। तथा मैंने सोचा कि परमेश्वर किस तरह सारे उचित वार्तालाप का वास्तविक स्त्रोत है। साँयस एण्ड हैल्थ में मेरी बेकर ऐडी ने यह लिखा: ''पारस्परिक संचार सदा परमेश्वर से उसके विचार, मानव तक होता है'' (पृष्ठ 284)।

परन्तु मेरी प्रार्थनाएं मुझे आवश्यक शाँति प्रदान नहीं कर रही थी। मैं अपनी सहेली से मिलने गई। जो एक क्रिश्चियन साँयटिस्ट है तथा कम्प्यूटर साँयस में कार्य करती है तथा उसे सारी स्थिति बताई। उसने मेरे भय की पुष्टि कर दी कि मेरी ई–मेल हैक हो चुकी थी तथा समझाया कि हम शिकायत कर सकते हैं, परन्तु पुनः प्राप्ति शायद सम्भव न हो पाए और मुझे नए सिरे से शुरू करना पड़े।

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

*For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com*

Translation © 2013 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

अपनी सम्पर्क सूची को दोबारा बनाने के विचार ने मुझे भयभीत कर दिया, जिसमें विभिन्न देशों से सैंकड़ो सम्पर्क सम्मिलित थे। इसके अतिरिक्त, मैंने कई सारे फोल्डर बनाए थे जिनमें वर्तमान की बड़ी गतिविधियों का फोल्डर भी सम्मिलित था। मैंने अपनी मित्र से अनुरोध किया कि वह वैबसाइट के सहायता विभाग को ई–मेल के द्वारा एक शिकायत मेरे कम्प्यूटर के लिए भेज दे। वह मान गई और ऐसा ही किया।। ग्राहक सेवा विभाग से जवाब आया तथा उन्होंने कहा वे 24 घंटो में उत्तर देंगे।

फिर मैंने कभी सोचा भी न था कि शाम को मुझे सारे संसार में रहने वाले अपने दोस्तों की अनगिनत फोन कॉलों का जवाब देना पड़ेगा क्योंकि हैक करने वाले ने मेरी तरफ से सब को लिख दिया था। उस व्यक्ति ने मेरे जानने वालों को बताया था कि मैं किसी अन्य देश में यात्रा कर रही थी और मुझे लूट लिया गया था, बिना पैसे के छोड़ दिया गया था, वापिस यात्रा करने में असमर्थ। हैक करने वाला मेरे लिखने के तरीके की नकल करने में काफी चालाक निकला, जिससे मेरे कई जानकार पैसे भेजने के बारे में सोचने लगे। जब चर्च के उन सदस्यों ने मुझे फोन किया जिन्हें यह ई–मेल मिला था, मैंने उन्हें इस स्थिति के बारे में मेरे साथ प्रार्थना करने के लिए आमन्त्रित किया। मैंने अपने सभी दोस्तों का उनकी प्रेम तथा देख–रेख से भरी कॉलों के लिए धन्यवाद दिया और उन्हें सान्तवना दी कि मैं सुरक्षित थी और अपने घर में थी।

देर रात को, मैंने प्रार्थना करने का फैसला किया तथा **परमेश्वर** के निर्देश को लिए सुना। मैंने अपनी ई–मेल की पुनः प्राप्ति के लिए तथा मेरी जानकारी के ऊपर पुनः–नियन्त्रण प्राप्त करने के लिए पूरी तरह **परमेश्वर** की बुद्धिमता पर यकीन करने का फैसला किया। मेरे क्रिश्चियन साँयस के अध्ययन से, मैं जानती थी कि **परमेश्वर** किसी को सज़ा नहीं देता। मैंने साँयस एंड हैल्थ में से इस सत्य पर ध्यान दे कर अपनी निर्दोषता का दावा किया: "सर्वशक्तिमान तथा अनन्त **मन** ने सब कुछ बनाया तथा हर चीज़ को सम्मिलित किया। यह **मन** गलतियाँ कर के बाद में उनका सुधार नहीं करता" (पृष्ठ 206)

---

जब चर्च के सदस्यों ने मुझे कॉल किया, जिन्हे ई–मेल मिला था, मैंने उन्हे अपने साथ प्रार्थना करने के लिए आमन्त्रित किया ।

---

मैंने यह जानने के लिए भी प्रार्थना की कि हैक करने वाला **परमेश्वर** का निष्पाप तथा सन्तुष्ट बच्चा है, इसलिए कि **परमेश्वर** ने किसी बुरे मन की रचना नहीं की। मैंने **परमेश्वर** के निर्देशन को पूरी तरह समर्पण कर दिया और जल्दी ही हैक करने वाले के लिए उसी ख्रीस्तीय प्रेम से भर गई जैसा मैं अपनी चर्च के जवान बच्चों तथा संडे स्कूल के बच्चों से करती हूँ जिन्होने **परमेश्वर**, **प्रेम** पर भरोसा कर के अपने जीवन में सही दिशा पाई। और यह **प्रेम** ही है जिसका रचना पर सम्पूर्ण नियन्त्रण होता है।

मैंने हैक करने वाले के खिलाफ कोई भी कार्यवाही न करने का फैसला किया और यह अपनी सहेली को भी बता दिया जो मुझे पुनः प्राप्रि में सहायता कर रही थी। हम इस मामले को कभी भी साइबर क्राइम शाखा में ले कर नहीं गए और ग्राहक सेवा की हर एक पूछताछ का धैर्य तथा सच्चाई से उत्तर दिया।

हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर मिला, जब दो दिन के बाद मुझे मेरा खाता वापिस मिला, विशेषज्ञ धारणाओं के विपरीत। हर फोल्डर तथा हर सम्पर्क पहले जैसा था और कोई वायरस भी नहीं था। और जिस तरह मैंने प्रार्थना की थी, हैक करने की निर्दोषता का **परमेश्वर** के बच्चे की तरह, दावा करते हुए, मुझे भविष्य में

Translation © 2013 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

अपनी जानकारी के किसी भी गलत प्रयोग का डर नहीं था। मैं इस व्यक्ति को सुधरा हुआ तथा परमेश्वर के निष्ठावान बच्चे की तरह देख सकी थी।

यह दो वर्ष पहले हुआ था और तब से मैं संसार भर के लोगों के साथ एकदम सही वार्तालाप का आनन्द ले रही हूँ।

इस घटना ने मुझे एक बड़ी सीख दी, शक्की होने के बजाए चौकस रहने की, जो कि मैं कुछ मुद्दों पर तथा कुछ लोगों के साथ (शक्की) थी। अब मैं हर बात में ज़्यादा से ज़्यादा परमेश्वर के नियन्त्रण को देखने की कोशिश करती हूँ।

Translation © 2013 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.